VII Paper

Q. शांख्य दर्शन की समीक्षा करें।

Give a critical estimate of Shakhaya Philosphy.

Ans -

सांख्यदर्शन भारतीय दर्शन में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। सृष्टिवाद के स्थान पर विकासवाद का नारा उठाकर उसने अपने को अन्य भारतीय विचारधाराओं पर निश्चित रूप से बड़ा है।

सांख्य दर्शन में कई असंगतियां पायी जाती हैं। निम्नलिखित रूप से इनके दोषों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है —

1. प्रकृति और पुरुष के द्वैत के विरुद्ध आक्षेप →

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति और पुरुष दो परम सताये हैं। इन दोनों में परस्पर विरोधी गुण पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए प्रकृति अचेतन है तो पुरुष, ~~निरगुण~~ चेतन है और प्रकृति ~~~~ त्रिगुणात्मक है तो पुरुष निरगुण है, प्रकृति एक है तो पुरुष अनेक है इत्यादि। सांख्य का कहना है कि इन्हीं परम परम सताओं के संयोग से विश्व का निर्माण और विकास होता है। इसी प्रकार सांख्य दर्शन में प्रकृति तथा पुरुष में द्वैत पाया जाता है।

यह पद्वैतवाद वस्तु एक तत्ववाद की ओर संकेत करता है। प्रकृति और पुरुष क्रमशः अनात्मा और आत्मा के प्रतीक हैं। इन दोनों के परस्पर रहने से ही ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। पुरुष या आत्मा के अभाव में प्रकृति या अनात्मा का ज्ञान किसको मिलेगा?" इसी प्रकार प्रकृति अभाव में पुरुष किसका ज्ञान प्राप्त करेगा?" इससे स्पष्ट है कि प्रकृति तथा पुरुष दोनों ही एक दूसरे की एक अपेक्षा रखते हैं। आत्मा को अनात्मा की अपेक्षा रहती है। ~~अनात्मा को~~ इससे भी स्पष्ट हो जाता है कि प्रकृति और पुरुष एक परम सत्ता के दो रूप हैं।

सांख्य का कहना है कि प्रकृति भोग्या है और पुरुष उसका भोगता है। प्रकृति पुरुष के भोग के लिए और उससे मोक्ष दिलाने के लिए विश्व की विभिन्न वस्तुओं का निर्माण करती है। यहाँ पर प्रकृति साधन -

Scanned with CamScanner

और पुरुष सांख्य के रूप में चित्रित किये गये हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्रकृति पुरुष के अधिगम्य होकर कार्य करती है। फिर भी सांख्य दर्शन प्रकृति को परम स्वतन्त्र बतलाता है इस दर्शन में असंगति उत्पन्न हो जाती है।

प्रकृति और पुरुष के बीच में संयोग किस प्रकार होता है? इसका सन्तोषप्रद उत्तर सांख्य ~~दर्शन~~ नहीं दे पाता है। दोनों परस्पर-विरोधी हैं दोनों की सम्बन्ध की व्याख्या सांख्य के लिए एक जटिल समस्या बन जाती है। अंधे और लंगड़े के उपमा के आधार पर इस सम्बन्ध की व्याख्या यहाँ की गई है। जिस प्रकार अंधा और लंगड़ा परस्पर सहयोग द्वारा जंगल पार कर जाते हैं, ठीक उसी प्रकार प्रकृति और पुरुष भी पारस्परिक सहयोग द्वारा विकास कार्य आरम्भ करते हैं। यह उपमा उपयुक्त नहीं कही जा सकती अन्धे और लंगड़े में उतना विरोध नहीं है जितना प्रकृति और पुरुष के बीच है। अंधा और लंगड़ा दोनों ही मानव हैं। तथा चेतन है। इसके विपरीत — प्रकृति अचेतन है तो पुरुष चेतन है। इसलिए यह उपमा के ~~विरुद्ध~~ आधार पर प्रकृति और पुरुष के सम्बन्ध की व्याख्या सन्तोषप्रद नहीं कही जा सकती।

अंधे और लंगड़े में उतना विरोध नहीं है जितना प्रकृति और पुरुष के बीच है। अंधा और लंगड़ा दोनों ही मानव हैं तथा चेतन है। इसके विपरीत प्रकृति अचेतन है तो पुरुष चेतन है। इसलिए इस उपमा के आधार पर प्रकृति और पुरुष के संबंध की व्याख्या सन्तोषप्रद नहीं कही जा सकती।

सांख्य दर्शन ने आरम्भ से अंत तक पुरुष तथा जीव को समान अर्थ में प्रयुक्त किया है। जन्म-मरण की बात उठाकर इसने पुरुष को नश्वर बना दिया है किन्तु यह दर्शन पुरुष को हमेशा नित्य एवं अनश्वर मानता है। इससे यहाँ आत्म विरोध हो जाता है।

सांख्य के अनुसार पुरुष निष्क्रिय है किन्तु, सांख्य इसे (पुरुष) भोक्ता और तथा ज्ञान का ज्ञाता बतलाता है। जब प्रश्न उठता है कि जो स्वयं-

Scanned with CamScanner

निष्क्रिय है, वो भला किसी वस्तु का भोग कैसे कर सकता है तथा वह बुद्धि को प्रभावित करके ज्ञान की प्राप्ति कैसे कर सकता है।" इस प्रश्न का संतोषप्रद उत्तर सांख्य-दर्शन नहीं पाता।

सांख्य के अनुसार विकास प्रकृति का ही होता है। इसी से विश्व के विभिन्न पदार्थ उत्पन्न होते हैं। यह प्रकृति स्वयं अचेतन है। अब प्रश्न है कि विकास प्रक्रिया का कोई उद्देश्य है या नहीं। सांख्य का कहना है कि विकास प्रक्रिया उद्देश्यपूर्ण है इसके दो उद्देश्य हैं — प्रकृति को अपना प्रदर्शन का अवसर मिलना तथा पुरुष के लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करना। यहाँ प्रश्न यह है कि अचेतन प्रकृति कैसे इन लक्ष्यों के लिए क्रियाशील होती है। इसके लिए यहाँ बछड़े द्वारा गाय के स्तन से दूध ग्रहण करने का रूपक दिया जाता है किन्तु इससे समस्या पर संतोषप्रद प्रकाश नहीं पड़ता है।

सांख्य दर्शन बंधन और मोक्ष को वास्तविक नहीं मानकर एक प्रकार का भ्रम उत्पन्न कर देता है। इसके अनुसार पुरुष मूलतः दुःखरहित है। वह न तो बंधन में फँसता है और न उसे मोक्ष ही मिलता है। अज्ञान वश पुरुष अपने को प्रकृति और इसके विकारों से अभिन्न मान लेता है तथा बंधन ग्रस्त होता है। यह बंधन वास्तविक नहीं होकर आकस्मिक हो जाता है। जब बंधन ही आकस्मिक है तो मोक्ष भी वास्तविक नहीं कहा जा जा सकता। मोक्ष की प्राप्ति ही सम्पूर्ण भारतीय दर्शन में जीवन की चरम सीमा लक्ष्य माना जाता है किंतु सांख्य इसे (मोक्ष) अवास्तविक या आकस्मिक बतला कर दर्शन का मुख्य प्रयोजन ही नष्ट कर देता है।

बंधन तथा मोक्ष वास्तविक हैं इन्हें अवास्तविक मानने पर मोक्ष प्राप्ति के लिए किए जाने वाले सभी प्रयत्न बेकार हो जाता है किन्तु इसे कोई भी विवेकी पुरुष स्वीकार नहीं कर सकता।

सांख्य के अनुसार मोक्ष एक ऐसी अवस्था है जहां तीनों दुःख (दैहिक, दैविक तथा भौतिक) दूर हो जाते हैं। यह एक दुःख रहित अवस्था है। यहाँ आनंद का भी सर्वथा अभाव रहता है। सांख्य ने मोक्ष को सुख एवं आकर्षण रहित बना दिया है। ऐसा मोक्ष कभी भी मानव का परम लक्ष्य नहीं हो सकता।

उपर्युक्त दोषों के बावजूद सांख्य दर्शन ने भारतीय परम्परा में एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।